'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 23 | अंक 13 | 19 सितम्बर, 2019 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

माननीय संघ प्रमुख श्री का गुजरात व मुंबई प्रवास

माननीय संघप्रमुख श्री 30 अगस्त से 11 सितम्बर तक गुजरात व मुंबई के प्रवास पर रहे। 30 अगस्त से 06 सितंबर तक सुरेन्द्र नगर स्थित संघ कार्यालय 'शक्तिधाम' में 29 अगस्त को जयपुर से रवाना होकर 30 अगस्त को सुबह 5 बजे शक्तिधाम पहुंचें तथा कार्यालय में उनके ठहरने हेतु नवनिर्मित कमरे का निरीक्षण किया। 31 अगस्त को सुरेंद्रनगर की बालक व बालिका शाखाओं के बालक-बालिकाएं अपने अभिभावकों सहित शक्तिधाम पहुंचे तथा संघप्रमुख श्री का सान्निध्य प्राप्त किया। शाम को 5 से 6 बजे तक शाखा के पश्चात अल्पाहार करके सभी वहां से रवाना हुए। 1 सितंबर को गुजरात के समस्त सक्रिय स्वयंसेवक शक्तिधाम पहुंचे। स्वयंसेवकों से अनौपचारिक बातचीत करते हुए संघप्रमुख श्री ने कहा कि आप लोगों में मुझे यहां नहीं बुलाया है बल्कि मैं स्वयं ही आया हूं और मुझसे मिलने के लिए आप यहां आए हैं अतः वास्तव में तो मैंने ही आपको बुलाया है। बुलाता वही है जिसको आवश्यकता होती है। आपको मेरी आवश्यकता हो या नहीं हो मुझे तो आपकी आवश्यकता है और इसीलिए मैं आपके पास आता हूं और आपको अपने पास बुलाता हूं। जो मेरी आवश्यकता है वह भी वास्तव में तनसिंहजी की ही आवश्यकता है। उनकी पीड़ा ही मेरी पीड़ा है और मैं चाहता हूं कि आप भी इस पीड़ा से पीड़ित हो जाएं। तनसिंह जी ने समाज, देश और मानवता के लिए जो स्वप्न देखा है उसे साकार करने का माध्यम आप ही हैं और इसीलिए आप मेरी आवश्यकता हैं। इसके पश्चात नवंबर माह में प्रस्तावित बालक व बालिकाओं के सात दिवसीय शिविर के बारे में चर्चा हुई जिनमें माननीय संघप्रमुख श्री ने आने की सहमति दी। गुजरात में उच्च प्रशिक्षण शिविर के आयोजन पर भी चर्चा हुई। जिसके लिए सभी स्वयंसेवकों ने उत्साहपूर्वक सहमति जताई। आगामी नवरात्रि में शक्तिधाम की स्थापना के 21 वर्ष पूर्ण होने पर समारोह आयोजित करने पर चर्चा हुई जिस पर वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा ने कहा कि हमें रजत जयन्ती पर बड़े समारोह के आयोजन पर विचार करना चाहिए और उसकी तैयारी अभी से प्रारंभ कर देनी चाहिए। माननीय संघप्रमुख श्री ने भी सहमति जताते हुए कहा कि मेरी भी इच्छा है कि 2020 में संघ के द्वितीय संघप्रमुख श्री आयुवानसिंह जी हुडील का 100वां जन्मदिवस. 2021 में संघ का 75वां स्थापना दिवस तथा 2024 में पूज्य श्री तनसिंह जी का 100वां जन्मदिवस बड़े स्तर पर समाज की सहभागिता से मनाया जाए। इसी प्रकार 2023 में शक्तिधाम की स्थापना की रजत जयंती भी आप लोग बड़े स्तर पर मनाएं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

संसार में प्रायः कोई संगठन खड़ा होता है तो वह किसी न किसी के खिलाफ खड़ा होता है लेकिन श्री क्षत्रिय युवक संघ किसी के खिलाफ नहीं है। न किसी जाति के खिलाफ है, न किसी संस्था के खिलाफ। न ही यह अधिकारों के लिए संघर्ष हेतु बना है। यह खिलाफ है तो बुराई के खिलाफ है। हमारी एवं संसार की बुराई को हम बलवान बने बिना नहीं मिटा सकते। इसके लिए चरित्र बल, धनबल, बाहुबल, जन बल आदि सभी में बलवान होना होगा। उसके लिए संघ लोक सम्पर्क, लोक संग्रह और लोक शिक्षण का मार्ग अपनाता है। इस प्रक्रिया से लोग श्रेष्ठ बनते जाते हैं और कारवां बनता जाता है। मुंबई में 10 सितम्बर की शाम 6 बजे आयोजित पारिवारिक स्नेहमिलन को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि क्षत्रिय का अर्थ क्षय से बचाने वाला होता है। किस वस्तु का क्षय हो रहा है, इसका विचार कर उसको क्षय से बचाना ही क्षात्र धर्म है। संसार में आधुनिक विकासवाद की अवधारणा मानती है कि हम नेष्ठ थे, अब श्रेष्ठ बने हैं। बंदर से मनुष्य बने हैं लेकिन भारतीय अवधारणा ऐसा नहीं मानती। उसके अनुसार हम श्रेष्ठ पुरुषों की संतान हैं और निरन्तर हमारी श्रेष्ठता का क्षरण हो रहा है। उस क्षरण से बचाना ही क्षात्र धर्म है। द्वापर के अंत में भगवान ने नष्ट होने योग्य को नष्ट किया एवं श्रेष्ठ का रक्षण किया, यही क्षात्रधर्म है। इसी बीच गीता का संदेश दिया कि दुराचारी, अत्याचारी और मिथ्याचारी का नाश किए बिना कल्याण संभव नहीं है चाहे वह कोई अपना ही हो। आप सब आजीविका कमाने मुंबई में आए लेकिन बचपन में बुजुर्गों से पूर्वजों की परम्परा लेकर आए, परिवार से संस्कार लेकर आए लेकिन आपके बच्चों तक ये कैसे पहुंचे क्यों कि आजकल तो संवाद ही नहीं होता। यह दुर्घटना हमारे साथ बीत रही है, क्षय होता जा रहा है। क्षात्रधर्म संसार का आदि धर्म है क्योंकि अच्छाई और बुराई सदैव रही है, सब जगह रही है इसीलिए क्षात्रधर्म भी सदा और सर्वत्र रहा है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

छात्रसंघ चुनाव परिणाम

अगस्त माह के अंतिम सप्ताह में संपन्न छात्रसंघ चुनावों में अनेक स्थानों पर राजपूत विद्यार्थी छात्रसंघ पदाधिकारी चुने गए हैं। महाविद्यालयों में अध्ययन के दौरान लोकतांत्रिक तरीके से राजनीतिक नेतृत्व विकसित करने के इस अभियान में निश्चित रूप से स्वाभाविक नेतृत्व क्षमता विकसित होती है, लेकिन विगत वर्षों का यह अनुभव है कि ऐसी सभी प्रतिभाएं अपने एक वर्ष के अल्पकालीन अध्यक्षीय जीवन के समाप्त होते-होते भीड़ में खो जाती हैं। चुनाव के दौरान एवं उसकी तैयारी के लिए खर्च होने वाली ऊर्जा के समक्ष उनका वह अल्पकालिक राजनीतिक जीवन इतना प्रभावी नहीं रह पाता। ऐसे में इस बार चुने गए सभी पदाधिकारियों को यही शुभकामनाएं दी जानी चाहिए कि उनको मिला यह अवसर उनके लंबे राजनीतिक जीवन की आधार भूमि बने।

विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर इस वर्ष निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुए हैं। यह सूची पूर्ण नहीं है क्योंकि हो सकता है अनेक लोगों की सूचना हमें प्राप्त नहीं हो पाई हो इसलिए प्रमाणिक एवं सम्पूर्ण जानकारी के लिए व्यक्तिगत प्रयास किए जाने चाहिए।

(सूची देखें पृष्ठ 7 पर)

शिविरों की शृंखला में जुड़ी तेरह और कड़ियां

श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रशिक्षण शिविरों की शृंखला अनवरत चल रही है। 31 अगस्त से 10 सितंबर तक इस शृंखला में तेरह कड़ियां और जुड़ीं। राजस्थान तथा गुजरात राज्यों में आयोजित इन शिविरों में 2 बालिका शिविर भी सम्मिलित हैं। गुजरात में बनासकांठा प्रांत के मेजरपुरा गांव स्थित सरस्वती हाईस्कूल में 31 अगस्त से 2 सितंबर तक तीन दिवसीय शिविर आयोजित हुआ। शिविर का संचालन करते हुए अजीतसिंह कुणघेर ने कहा कि मेजरपुरा के इस शिविर से आप के श्रम, साहस, संयम और साधना की सुगन्ध पूरे क्षेत्र में फैलेगी तथा गांव-गांव में संघ के संदेश को प्रसारित करेगी। शिविर में 5 जिलों की 10 तहसीलों के 31 गांवों से 140 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। व्यवस्था में कीर्तिसिंह भाटी, गंभीरसिंह बारड मूलाजी सोनाजी, भगवान सिंह भाटी, अर्जुनसिंह भाटी, सामंत सिंह, अमरसिंह भाटी, रघुवीरसिंह, दलपतसिंह एवं मेजरपुरा के समस्त क्षत्रिय बंधुओं ने सहयोग किया। शिविर के दौरान एक पारिवारिक स्नेहमिलन भी आयोजित किया गया जिसमें 1100 समाजबंधु व मातृशक्ति ने सम्मिलित होकर संघ का परिचय प्राप्त किया। बावन आटा शैक्षणिक मंडल के प्रमुख लक्ष्मण सिंह मेमदपुर, पूर्व प्रमुख हमीरसिंह मोटा, मदारसिंह सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति स्नेहमिलन में शामिल हुए। गुजरात में भाल प्रांत के अंतर्गत आने वाले धंधुका स्थित राजपूत छात्रावास में भी 7 से 9 सितंबर तक एक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। शिविर का संचालन करते हुए धर्मेन्द्र सिंह आम्बली ने कहा कि अपने कर्त्तव्य को पहचान कर उसका पालन करने से ही हमारा जीवन सार्थक हो सकता है। भौतिकवाद की अंधी दौड़ में लगे हुए संसार को कर्त्तव्यनिष्ठ और जागृत लोग ही सत्य और शांति का मार्ग दिखा सकते हैं। शिविर में धोलेरा, सोठिडा, पांची, आम्बली, मोरचंद, पछेगाम आदि गांवों से लगभग 130 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। चुड़ासमा राजपूत समाज के कार्यकर्ताओं ने व्यवस्था का जिम्मा संभाला। गुजरात के गोहिलवाड़ संभाग में राजकोट स्थित हरभमजी राज गरासिया राजपूत बोर्डिंग हाउस में भी एक शिविर का आयोजन हुआ। महेंद्रसिंह पांची के संचालन में 7 से 9 सितंबर तक सम्पन्न इस शिविर में बोर्डिंग हाउस के 105 विद्यार्थियों सहित कुल 115 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। जयेन्द्र सिंह कोटड़ा नायाणी ने व्यवस्था में सहयोग किया। संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक प्रवीण सिंह सोळिया, दशरथसिंह छत्रासा तथा दिलुभा जिंजर भी शिविर में उपस्थित रहे। शिविर संचालक ने शिविरार्थियों को इन वयोवृद्ध स्वयंसेवकों का उदाहरण देते हुए कहा कि कर्त्तव्यपालन के मार्ग पर उम्र सहित कोई भी बाधा महत्त्व नहीं रखती। 100 वर्ष पुराने इस बोर्डिंग हाउस में संघ के अनेकों शिविर लग चुके हैं। गुजरात के अहमदाबाद प्रांत में भी 31 अगस्त से 2 सितंबर की अवधि में काणेटी गांव में बालिका शिविर का आयोजन हुआ जिसका संचालन जागृति बा हरदासकाबास ने किया। उन्होंने शिविर में उपस्थित बालिकाओं से कहा कि नारी परिवार का केंद्र होती है और परिवार के माध्यम से समाज में ज्ञान, कर्म और भक्ति की त्रिवेणी बहाने में उसका सर्वप्रमुख योगदान है। शिविर में काणेटी, चेखला, साणंद, खोडा, पीपण, परवाडा, मोडासर, वासना (इ), गोधावी, गांधीनगर, वसइ (डाभला), वसइ (टीबा), सनाथल, वडाला, बिगेरे आदि स्थानों से लगभग 135 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर के अंतिम दिन स्नेहमिलन भी रखा गया जिसमें आस-पास के गांवों से बालिकाएं व महिलाएं सम्मिलित हुईं। उपखंड अधिकारी भारती बा वाघेला तथा हेमचंद्राचार्य यूनिवर्सिटी की पूर्व उप कुलपति दीपुबा देवड़ा ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया।

जालोर संभाग में जालोर प्रान्त के कुआरडा गांव में नरपतसिंह जी के फार्म हाउस पर एक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ, जिसका संचालन अमरसिंह चांदना ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि संघ हमारे जीवन में जागरण का शंख फूंक रहा है। जागृत व्यक्ति ही समाज को जगाने का कार्य कर सकता है। 7 से 10 सितंबर की अवधि में सम्पन्न इस शिविर में मोरुआ, बेदाना, अगवरी, कुआड़ा, धिंगाणा, पांचोटा, बाला, चेंडा, रोडला, पांचला, भाद्राजून, आकोरापादर, झाड़ोली वीर, असाडा, भंवरानी आदि गांवों के युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। जयसिंह आकोरापादर तथा खुमानसिंह दुदीया ने व्यवस्था का जिम्मा संभाला। जालोर संभाग में ही सांचोर प्रान्त के हरियाली गांव में भी एक शिविर का आयोजन इसी अवधि में हुआ। महोब्बत सिंह धींगाणा के संचालन में सम्पन्न इस शिविर में हरियाली, सुरावा, सेवाड़ा, करवाड़ा, पुर, जाखड़ी, केरिया, होतीगांव, भाटीप आदि गांवों के स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर संचालक ने कहा कि कष्टों और संघर्षों से जो नहीं घबराते वही संसार को नई ज्योति दिखाते हैं। हम यहां जो अभिनव तप कर रहे हैं उसका प्रभाव सम्पूर्ण जगत पर पड़ रहा है। भवानी सिंह हरियाली ने समस्त ग्रामवासियों के साथ मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला।

7 से 10 सितंबर की अवधि में ही एक प्रशिक्षण शिविर श्री मोड़िया महादेव जी, बगेरिया बिजयपुर, चित्तौडगढ़ में भी आयोजित हुआ जिसमें बिजयपुर, जवासिया, भीमपुरिया, सोकिया, अचलपुरा, खेड़िया, सहाड़ा, चरपोटिया, नरधारी, आकोला गढ़, भाटियो का खेड़ा, बेनिपुरिया, बाढ़ा पिचाणोत (सवाई माधोपुर), सांपनी (जालोर), बेमला (उदयपुर) आदि गाँवो से युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का संचालन करते हुए भंवर सिंह बेमला ने कहा कि एकता ही इस युग की वास्तविक शक्ति है। हमारे समाज को एकता के सूत्र में बांधने के लिए ही संघ द्वारा यह साधना की जा रही है। बिजयपुर राव साहब नरेंद्र सिंह , दिग्विजय सिंह बिजयपुर, भवानी प्रताप सिंह बिजयपुर, गोपाल शरण सिंह सहाड़ा, लक्ष्मण सिंह भाटियो का खेडा, जीवन सिंह नरधारी आदि ने व्यवस्था में सहयोग किया। मेवाड़-वागड़ संभाग के वागड़ प्रांत में बालिकाओं का एक शिविर सिसोदिया फार्म हाऊस, नाहर मंगरा, डूंगरपुर में 7 से 10 सितंबर तक आयोजित हुआ। लक्ष्मी कंवर खारड़ा के संचालन में सम्पन्न इस शिविर में खरोडिया, लिमड़ी, मांडवा, साबली, गेड़, गुजरात, बागीदौरा, लाम्बपारड़ा, कातरिया, करेलिया, छेला, खेरवाड़ा, मिताली, माथुगामड़ा, बेड्सा पीठ, गरियता, घड़माला, आन्तरसोबा, बिछीवाड़ा, रातड़िया, गेहूवाड़ा, पांतली, सकानी, पारडा, गढ़ा मोरिया व डुंगरपुर से लगभग 200 स्वयंसेविकाएं सम्मिलित हुईं। वरिष्ठ स्वयंसेवक गंगासिंह सजियाली भी शिविर में उपस्थित रहे। रायसिंह, सूर्यसिंह, करण सिंह, लालसिंह ,वीरभद्र सिंह व समस्त सिसोदिया परिवार नाहरमंगरा साबली फार्म हाउस ने व्यवस्था में सहयोग किया। 9 सितंबर को रुद्र वाहिनी संघ के योगी प्रकाशनाथ शिविर में पधारें। उन्होंने बालिकाओं से कहा कि समाज में संगठन व संस्कृति के रक्षण की आज अत्यधिक आवश्यकता है और इसके लिए संसार की दृष्टि क्षत्रियों पर ही टिकी है। मेवाड़- मालवा संभाग में ही भीलवाड़ा- हाड़ौती प्रान्त के बड़ी रूपाहेली गांव में भी इसी अवधि में एक शिविर आयोजित हुआ। शिविर का संचालन करते हुए बृजराजसिंह खारड़ा ने कहा कि बिना सामाजिक भाव के मनुष्य का जीवन पशु के समान हो जाता है तथा वह केवल अपने स्वार्थ का ही चिंतन कर पाता है। हमने सौभाग्य से क्षत्रिय के घर जन्म लिया है और श्री क्षत्रिय युवक संघ की सामाजिक साधना में सहभागी बने हैं। अब हमारा कर्त्तव्य है कि हम इस अवसर को लापरवाही से न गवां देवें। शिविर में उदयपुर, भीलवाड़ा शहर, ढेलाणा, सरेड़ी, सबलपुरा, गुलाबपुरा, भटेडा, सनोदिया आदि स्थानों के लगभग 120 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिवराजसिंह, सतेंद्र सिंह, लड्डू बन्ना आदि ने व्यवस्था में सहयोग किया। जैसलमेर संभाग के चांधन प्रांत के सोढ़ाकोर गांव में 7 से 10 सितंबर तक शिविर आयोजित हुआ। शिविर का संचालन तारेन्द्रसिंह झिनझिनयाली ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि आप ही कौम और समाज का भविष्य हैं। आपके चरित्र और योग्यता पर ही देश का भविष्य निर्भर करता है, इसीलिए संघ आपको एकत्रित करके चरित्र निर्माण का यह शिक्षण प्रदान कर रहा है। शिविर में सोढाकोर, डेलासर, चांधन, मालीगड़ा, करमा की ढाणी, धायसर, मूलाना, द्वारा, बेरसियाला, रामगढ़, सनावड़ा, झिनझिनयाली, म्याजलार, जेठा आदि गांवों से 150 राजपूत युवा सम्मिलित हुए। छतरसिंह सोढाकोर, देवीसिंह सोढाकोर, चुतरसिंह सोढाकोर, राजू सिंह सोढाकोर व करणसिंह सोढाकोर ने मिलकर व्यवस्था में सहयोग किया। बाड़मेर में भारतीय ग्राम्य आलोकायन ट्रस्ट द्वारा संचालित आलोक आश्रम में भी इसी अवधि में एक शिविर सम्पन्न हुआ। भगवान सिंह दुधवा ने शिविर का संचालन करते हुए कहा कि संस्कारो की व्यक्तिगत, सामाजिक व राष्ट्रीय जीवन के निर्माण में महत्ती भूमिका है इसीलिए संघ विगत 73 वर्षों से निरंतर इस कार्य में जुटा हुआ है। शिविर में बाड़मेर शहर के विभिन्न छात्रावासों से लगभग 180 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। नागौर संभाग के लाडनूं सुजानगढ़ प्रान्त के डीडवाना मंडल के अंतर्गत बरांगणा गांव में भी 7 से 10 सितंबर की अवधि में एक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। श्री राजपूत सभा भवन में सम्पन्न इस शिविर में बरांगणा, खरेश, भंडारी, हरनावा, देनोक, मानगढ़, ललाना, सिंघाना, ढिंगसरी, जेवलियाबास, रातंगा, लखासर, झंझेऊ, गांवड़ी आदि गांवों के युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का संचालन करते हुए नत्थू सिंह छापड़ा ने कहा कि संघ ने हमें स्वयं को पहचानने का अनूठा अवसर प्रदान किया है, जिसका हमें पूरा लाभ उठाना है। शिविर के दौरान 9 सितंबर को स्नेहमिलन भी रखा गया जिसमें स्थानीय समाजबंधुओं तथा मातृशक्ति ने भाग लिया। संभागप्रमुख शिम्भू सिंह आसरवा ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि हम अपने पूर्वजों के मार्ग का भूल गए हैं, संघ हमे पुनः उसी मार्ग पर चलाने के लिए प्रयास कर रहा है। मदन सिंह तथा विनोद सिंह बरांगणा ने व्यवस्था का जिम्मा संभाला। बीकानेर प्रान्त के बेलासर गांव में भी इसी अवधि में एक शिविर शक्ति सिंह आशापुरा के संचालन में सम्पन्न हुआ जिसमें बेलासर, झंझेऊ, गीगासर, पुंदलसर, कीरतासर आदि गाँवो के 115 बालकों और युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। शिविर संचालक ने शिविरार्थियों को दृढ़ संकल्प का महत्त्व बताते हुए कहा कि संकल्पवान लोगों का ही संसार अनुकरण करता है अतः नियमित अभ्यास द्वारा हमें अपने संकल्प को दृढ़तम बनाना है। जुगल सिंह बेलासर ने गाँव के युवा वर्ग के सहयोग से व्यवस्था का जिम्मा संभाला।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हमारे प्रिय संघ बंधु

करणीपालसिंह गांवड़ी

को पदोन्नत होकर

भारतीय सीमा सुरक्षा बल

में

असिस्टेण्ड कमांडेंट

बनने पर हार्दिक बधाई एवं

उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

शुभेच्छु :

श्री प्रेमसिंह रणधा	श्री चन्द्रवीरसिंह देणोक	श्री हरिसिंह ढेलाणा	श्री उम्मेदसिंह सेतरावा
श्री भैरूसिंह बेलवा	श्री भवानीसिंह पीलवा	श्री दातारसिंह दुगोली	श्री सवाईसिंह बागोरिया
श्री पाबूसिंह लवारन	श्री गोरखसिंह बापिणी	श्री हुकमसिंह पीलवा	श्री बाबूसिंह बापिणी
श्री नरपतसिंह रामदेरिया	श्री शैतानसिंह सगरा	श्री भैरूसिंह चाबा	श्री अर्जुनसिंह जिनजिनयाला
श्री सांवतसिंह उंचाईड़ा	श्री नरपतसिंह बस्तवा	श्री गुलाबसिंह बस्तवा	श्री लूणकरणसिंह तेना

एवं समस्त संघ बंधु, संभाग-जोधपुर।

संपादकीय

लोकतांत्रिक मूल्य -व्यवस्था और आचरण

विगत दिनों राजस्थान सरकार के पुलिस विभाग द्वारा एक आदेश निकाला गया जिसमें गाड़ियों पर नाम जाति का नाम, अन्य कोई नाम, चिह्न आदि हटाने या न लगाने का निर्देश दिया गया। परिवार में सामान्य चर्चा के दौरान इसके बारे में बताया था तो बच्ची ने पूछा 'क्यों?' उसको जवाब दिया कि सरकार है, वह ऐसा आदेश निकाल सकती है। उसका प्रति प्रश्न था कि ऐसे कैसे निकाल सकती है, सरकार को भी तो हमने बनाया है। उसके उस प्रश्न को शांत किया जा सकता है और कर भी दिया लेकिन उसके इस प्रश्न ने स्पष्ट किया कि उसका यह 'क्यों' ही लोकतांत्रिक मूल्य है। लोकतंत्र की अकादमिक परिभाषा कुछ और हो सकती है, उसकी लंबी चौड़ी व्याख्या हो सकती है लेकिन व्यवहार में देखें तो शासक द्वारा इस प्रकार के 'क्यों' का जवाब देना ही लोकतंत्र है। दूसरे शब्दों में इसे ही जवाबदेही कहते हैं। अपनी जनता के प्रति जवाबदेह शासक ही लोकतांत्रिक होता है और यह जवाबदेही ही सबसे बड़ा लोकतांत्रिक मूल्य है। एक अधिनायकवादी और लोकतांत्रिक शासक में मूल अंतर जवाबदेही का ही होता है। अधिनायकवादी शासक अपने शासितों के प्रति जवाबदेह नहीं होता जबकि एक लोकतांत्रिक शासक अपने शासितों के प्रति जवाबदेह होता है। वास्तव में तो शासक और शासित शब्द ही लोकतांत्रिक नहीं है। इसलिए लोकतंत्र की चर्चा करते समय तो इन शब्दों का उपयोग ही लोकतंत्र की भावना के विपरीत होता है। ये शब्द तो मध्ययुगीन बादशाहों के लिए उपयुक्त है जहां उनकी इच्छा ही कानून होता था और वे किसी के प्रति जवाबदेह नहीं होते थे। भारत में 1192 ई. के बाद पनपी केन्द्रीय सत्ता क्या कभी किसी भी प्रकार से जनता के प्रति जवाबदेह थी? निश्चित रूप से नहीं थी, इसलिए तो जजिया कर लगा करते थे। व्यक्तिगत मनोरंजन के लिए युद्ध हो जाया करते थे, व्यक्तिगत आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए रियाया की आकांक्षाओं को रौंदा जाता था। ऐसा ही 1765 ई. में बक्सर के युद्ध के बाद केन्द्रीय सत्ता बने अंग्रेजों ने किया। वे 200 वर्ष तक भारत की केन्द्रीय सत्ता पर काबिज रहे और इस दौरान भारत के प्रति तनिक भी जवाबदेह नहीं रहे। उनके जाने के बाद भारत में आई व्यवस्था को लोकतांत्रिक व्यवस्था कहा गया। इस व्यवस्था में जनता को शासक चुनने का अधिकार दिया गया और माना गया कि जनता द्वारा चुनी गई सरकार जनता के प्रति जवाबदेह होगी। यदि जवाबदेह नहीं होगी तो जनता को वह सरकार बदलने का अधिकार होगा। व्यवस्थागत आकलन करें तो इससे सुंदर व्यवस्था लोकतांत्रिक मूल्यों को स्थापित करने की हो नहीं सकती। शासक तो जवाबदेह बनाने के लिए इससे सुन्दर व्यवस्था क्या हो सकती है? लेकिन व्यवस्था बनने के बाद भी व्यवस्था को चलाने वाले लोगों का आचरण शेष रह जाता है। व्यवस्था में वही आचरण प्रकट होता है। यदि आचरण लोकतांत्रिक नहीं होगा तो सुंदर से सुंदर व्यवस्था में भी अधिनायकवाद पनप सकता है। इसके उदाहरण हमें हमारी वर्तमान भारतीय व्यवस्था एवं संसार में अन्यत्र भी बहुतायत में देखने को मिल सकते हैं। इसलिए व्यवस्था नहीं आचरण महत्वपूर्ण है। यदि हमारा आचरण लोकतांत्रिक है। यदि हमारा स्वभाव जवाबदेही को पसंद करता है। हमारे द्वारा किए जाने वाले किसी भी काम को लेकर उठने वाले प्रश्न 'क्यों' का जवाब देने को तैयार रहता है तब ही हम लोकतांत्रिक हैं। और यदि हम लोकतांत्रिक हैं, हमारा स्वभाव एवं प्रकृति लोकतांत्रिक है, हम जवाबदेही को नैतिक रूप से स्वतः स्वीकार करते हैं तो फिर यह महत्वपूर्ण नहीं रहता कि आपने व्यवस्था कौनसी अपनाई है। यदि व्यवस्था ही पर्याप्त होती तो फिर भारत में आपातकाल लागू नहीं होता, बार-बार भिन्न-भिन्न राज्यों में धारा 356 का उपयोग नहीं किया जाता। लोकतांत्रिक व्यवस्था से चुना गया हिटलर अधिनायक नहीं बनता। लोकतांत्रिक व्यवस्था वाले पाकिस्तान में बार-बार अधिनायक पैदा नहीं होते। लोकतांत्रिक व्यवस्था के इस दौरे में भी अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के अधिकांश देशों में बार-बार अधिनायकवादी सरकारें नहीं बनती। इसलिए महत्वपूर्ण व्यवस्था नहीं बल्कि आचरण होता है। भारत सदा से आचरण प्रधान देश रहा है। यहां सदा से लोकतांत्रिक मूल्यों को आचरण में ढालने का विचार प्रभावी रहा है। यहां के शासक से सदैव जनता के प्रति जवाबदेह होने की अपेक्षा की गई है इसीलिए तो शासक के रूप में जनता के प्रति जवाबदेह बनने के लिए अपनी निर्दोष पत्नी को सब कुछ जानते हुए देश निकाला देने वाले भगवान राम का शासन यहां आदर्श शासन माना जाता है। पश्चिम से आई मध्यकालीन आंधियों के प्रभाव के कारण आई कुछ विकृतियों को नजरअंदाज करें तो लगभग हर भारतीय शासक ने अपने आपको अपनी जनता के प्रति जवाबदेह बनाए रखा। अपनी जनता के मन में उठने वाले संभावित 'क्यों' का सदैव ध्यान रखा एवं उस 'क्यों' का निराकरण करने के लिए अपनी प्रिय से प्रिय परिस्थिति का भी त्याग करने को तत्पर रहे। लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति इस सम्मान के कारण ही हमारे पूर्वज भारत की जनता के हृदय पटल पर सदियों तक शासन करते रहे। इस 'क्यों' को उठने से पहले ही शांत करने की क्षमता के कारण ही तो जनता अपने शासकों के लिए अपने सुखों का त्याग करने को तत्पर रहती थी। इसलिए जब भी लोकतांत्रिक मूल्यों की बात हो हमें इस बात की गर्वोक्ति करने में तनिक भी झिझक नहीं होनी चाहिए कि हम उन महान पूर्वजों की संतान हैं जिन्होंने अपनी जनता के प्रति जवाबदेही के लोकतांत्रिक मूल्य के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। साथ ही अपने आपको उस आदर्श परम्परा का संवाहक बनाने के लिए अपने आचरण में लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखने का या लुप्त हो रहे इन मूल्यों को प्रकट करने का अभ्यास करना चाहिए। श्री क्षत्रिय युवक संघ ऐसा ही अभ्यास का मार्ग है जो हमें संसार के प्रति, हमारे दायित्वों के प्रति जवाबदेह बनाकर लोकतंत्र को आचरण में प्रकट करने को प्रेरित करता है। यदि हम हमारा आचरण इस अनुरूप बनाने में सक्षम हुए तो व्यवस्था चाहे कोई भी हो, लोकतांत्रिक मूल्य सदैव बचे रहेंगे।

चौहटन, जालोर, फलसूंड, देचु व हरियाली में बैठक

श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउण्डेशन के विचार को आम राजपूत तक पहुंचाकर सकारात्मक सहयोगियों को ढूंढने के अभियान के तहत 1 सितम्बर को चौहटन, जालोर व फलसूंड तथा 8 सितम्बर को देचु व 10 सितम्बर को हरियाली (सांचौर) में बैठक आयोजित की गई। चौहटन की बैठक में सहसंयोजक आजादसिंह शिवकर ने फाउंडेशन के विषय में जानकारी देते हुए आर्थिक आधार पर आरक्षण हेतु पात्रता प्रमाण-पत्र बनवाने को लेकर चर्चा की। उपस्थित सहयोगियों ने अपने-अपने क्षेत्र में पात्र लोगों के प्रमाण-पत्र बनवाने का लक्ष्य लिया। फलसूंड के सहयोगियों की बैठक पंचायत भवन में रखी गई एवं सभी ने मिलकर निर्णय लिया कि पंचायत के निकट समाज की गतिविधियों के लिए किराए पर लिए गए कमरे में एक कम्प्यूटर ऑपरेटर को कम्प्यूटर सहित बिठाया जाए जो प्रतिदिन दो घंटे वहां बैठे एवं समाज के लोगों को सरकारी योजनाओं का लाभ दिलवाने हेतु उनके आवदेन भरे। जालोर व आहोर तहसील के सहयोगियों की बैठक जालोर स्थित हल्देश्वर महादेव मंदिर प्रांगण में रखी गई। बैठक में फाउण्डेशन की अवधारणा को विस्तार से बताया गया। उपस्थित सहयोगियों ने दोनों तहसीलों को 8-10 भागों में बांटकर हर भाग में ऐसी ही बैठकें करने का दायित्व लिया। इस बैठक में संघ के संभाग प्रमुख अर्जुनसिंह देलदरी, डॉ. गणपतसिंह सराणा, दशरथसिंह सेदरिया, चंदनसिंह कोसणा, अभिमन्युसिंह देसु, पन्नेसिंह पोषाणा सहित बड़ी संख्या में समाजबंधु उपस्थित रहे। 8 सितम्बर को जोधपुर के देचु कस्बे के आदर्श महाविद्यालय में इस क्षेत्र की बैठक का आयोजन किया गया जिसमें देचु, गुमानपुरा, पीलवा, लोड़ता, तेना आदि गांवों के समाजबंधु उपस्थित रहे। यहां भी सभी सहयोगियों ने फाउण्डेशन की अवधारणा को समझा एवं अपने-अपने गांवों में ऐसी बैठकें आयोजित कर इस संदेश का प्रसार करने का आश्वासन दिया। सांचौर के हरियाली में 10 सितम्बर को बैठक की गई जिसमें हरियाली, चौरा, अरणाय आदि गांवों के समाजबंधु शामिल हुए।

वागड़ क्षत्रिय महासभा का प्रतिभा सम्मान समारोह

वागड़ क्षत्रिय महासभा का प्रतिभा सम्मान समारोह 8 सितम्बर को बांसवाड़ा में आयोजित हुआ जिसमें 70 विद्यार्थियों, 35 सेवानिवृत राजकीय कर्मचारियों, 25 नवनियुक्त राजकीय कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। समारोह को संबोधित करते हुए जिला पुलिस अधीक्षक केशरसिंह शेखावत ने अभिरुचि एवं क्षमतानुरूप लक्ष्य निर्धारित करने एवं तद्नुरूप समय प्रबंधन की आवश्यकता जताई। उन्होंने क्षत्रिय की मूल प्रवृति की चर्चा करते हुए कहा कि यह चिंतनीय है कि सम्पूर्ण समाज की रक्षा करने वाला समाज आज स्वयं को असुरक्षित महसूस कर रहा है। उन्होंने प्रशासनिक सेवाओं में भागीदारी बढ़ाने, सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन करने एवं कथनी व करनी को समान रखने की बात कही। बालिका पल्लवी राज कोटड़ा ने समाज में महिलाओं के संघर्ष, व्यवहार और समाज विकास में भूमिका पर अपनी बात कही। समारोह को महासभा के अध्यक्ष राजेन्द्रसिंह आनंदपुरी, प्रतापभानु खांदू, कृष्णपालसिंह टामटिया, पृथ्वीराजसिंह लांबापारड़ा, हेमेन्द्रसिंह कोटड़ा, कमलसिंह नोगामा, तेजसिंह अमृतिया, जयगिरीराज सिंह आदि ने भी संबोधित किया।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	19.09.2019 से 22.09.2019 तक	**टेपू** (जोधपुर)। फलोदी-बारू मार्ग पर। सुबह, दिन में व शाम को बसें।
2.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	19.09.2019 से 22.09.2019 तक	**राजगढ़** (जैसलमेर)। पोकरण से राजगढ़ के लिए बसें उपलब्ध।
3.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	19.09.2019 से 22.09.2019 तक	**केतू कला**। जोधपुर-जैसलमेर मार्ग पर 34 मील उतरें। **सम्पर्क सूत्र :** नाथूसिंह - 9950473366
4.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	19.09.2019 से 22.09.2019 तक	**गिड़ा** (बाड़मेर)। बालोतरा, बायतु व पाटोदी से बस उपलब्ध।
5.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	19.09.2019 से 22.09.2019 तक	**ईसरू** (ओसियां)। जिला जोधपुर।
6.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	20.09.2019 से 23.09.2019 तक	मुडेश्वर महादेव मंदिर **बिशनगढ़** (जालोर)।
7.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	20.09.2019 से 23.09.2019 तक	बिरलेश्वर महादेव मंदिर **बिरोलिया** (पाली)। सुमेरपुर से बस व टैक्सी उपलब्ध।
8.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	05.10.2019 से 08.10.2019 तक	**डोरडा** (जालोर)।
9.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	05.10.2019 से 08.10.2019 तक	**ढेलाना** (जोधपुर)। **सम्पर्क सूत्र :** हरिसिंह ढेलाना - 9783622100
10.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	05.10.2019 से 08.10.2019 तक	**बामणू** (जोधपुर)। जोधपुर-पोकरण मार्ग पर मंडला उतरें वहां से साधन उपलब्ध रहेगा।
11.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	05.10.2019 से 08.10.2019 तक	**दामोदरा** (जैसलमेर)। जैसलमेर सम मार्ग पर।
12.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालिका)	05.10.2019 से 08.10.2019 तक	जैतमाल छात्रावास **पादरू** (बाड़मेर)। बालोतरा, सिवाणा व सिणधरी से बस उपलब्ध।
13.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालिका)	05.10.2019 से 08.10.2019 तक	**जाखली** (नागौर)।
14.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	19.10.2019 से 22.10.2019 तक	**रोडा** (बीकानेर)। नोखा से तीन किलोमीटर दूर।
15.	सात दिवसीय प्र.शि. (बालक)	19.10.2019 से 25.10.2019 तक	**रानीवाड़ा** (जालोर)।
16.	सात दिवसीय प्र.शि. (बालक)	19.10.2019 से 25.10.2019 तक	राव चंपाजी संस्थान **शिव** (बाड़मेर)। **सम्पर्क सूत्र :** राजेन्द्रसिंह भिंयाड़ (द्वितीय) 9414655723
17.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालिका)	20.10.2019 से 23.10.2019 तक	आशापुरा माताजी मंदिर **नाडोल** (पाली)।
18.	सात दिवसीय प्र.शि. (बालक)	20.10.2019 से 26.10.2019 तक	**फलसूंड** (जैसलमेर)। पोकरण, शेरगढ़, सांकड़ा व बाड़मेर से बसें उपलब्ध।
19.	सात दिवसीय प्र.शि. (बालक)	20.10.2019 से 26.10.2019 तक	श्री गणपतसिंह का फार्म हाउस, **पीपलूण**। (सिवाणा, बाड़मेर)
20.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालिका)	22.10.2019 से 25.10.2019 तक	विरात्रा महाविद्यालय, **चौहटन**। **सम्पर्क सूत्र :** मोहनसिंह देदूसर-9950116125
21.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालिका)	22.10.2019 से 25.10.2019 तक	मल्लीनाथ छात्रावास, **देवीकोट** (जैसलमेर)।
22.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालिका)	22.10.2019 से 25.10.2019 तक	नारायण निकेतन **बीकानेर**।
23.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	22.10.2019 से 25.10.2019 तक	**सेमारी** (उदयपुर)। **सम्पर्क सूत्र :** डूंगरसिंह भीमपुर-9829738898 कर्नल केसरसिंह-8107806119

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

दीपसिंह बैण्यांकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

पाटण मंडल में बालिका स्नेहमिलन

गुजरात में संघ के पाटण मंडल के पारेवीया वीर मंदिर में 8 सितम्बर को बालिका स्नेहमिलन रखा गया जिसमें आसपास के 38 गांवों की 400 से अधिक बालिकाएं शामिल हुई। प्रातः 9 बजे से अपराह्न 3 बजे तक चले स्नेहमिलन में गुजरात महिला विभाग की प्रभारी जागृति बा हरदास का बास ने बालिकाओं को क्षत्राणी के धर्म, आचरण एवं इतिहास की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बालिकाओं के लिए वरेण्य सावधानियों के बारे में बताया एवं आदर्श परिवार में उनकी भूमिका का दिग्दर्शन करवाया। दोपहर भोजन के बाद बालिकाओं को बौद्धिक खेल खिलाए एवं शाखा लगाने के तरीका बताया गया। कार्यक्रम में वसाई, मुजपुर, कुकराणा, हारीज, चन्द्रावती, पीलूडा, कंबोई, अडिया, कमलिवाड़ा, नेद्रा और बबासणा गांवों की बालिकाओं ने अपने गांव में साप्ताहिक शाखा लगाने की जिम्मेदारी ली। बालिकाओं के साथ आए पुरुष अभिभावकों का अलग से स्नेहमिलन रखा गया जिसमें अजीतसिंह कुणघेर, इन्द्रसिंह जेतलवासणा, करणसिंह कमाणा, विक्रमसिंह कमाणा, महावीरसिंह हरदासकाबास ने संघ विषयक जानकारी दी। महेसाणा प्रांत में चल रहे संघ कार्य एवं इस वर्ष के लक्ष्यों को लेकर भी चर्चा की गई।

प्रतिवर्ष की भांति जेताजी जयंती मनाई

पाली जिले के बगड़ी नगर कस्बे में प्रतिवर्ष की भांति गिरि सुमेल युद्ध के नायक एवं जेतावत राठौड़ों के पितृ पुरूष जेताजी की जयंती 1 सितम्बर को उत्साहपूर्वक मनाई गई। सर्व प्रथम गांव स्थित जेताजी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया। तत्पश्चात समारोह का आयोजन हुआ। समारोह को राजस्थान सरकार वित्त सचिव निरंजन आर्य, पूर्व आई.ए.एस. ए.सी. भट्ट, गिरवरसिंह राठौड़, हनुमानसिंह भैंसाणा, भंवरसिंह पलाड़ा, भंवरसिंह मंडली, इन्द्रसिंह बागावास आदि ने संबोधित किया।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

आठ सितम्बर को सूरत में आयोजित क्षत्रिय सम्मेलन में माननीय संघप्रमुख श्री के उद्‌बोधन का संपादित अंश

सूरत की सूरत को आप जानते होंगे, पति, पत्नी, बच्चो की सूरत जानते होंगे, गुजरातवासी गुजरात की व भारतवासी भारत की सूरत जानते हैं तो हम थोड़े जागरूक हैं, पर जागकर भी कुछ कर नहीं पाते हैं तो हम विवश हैं, लाचार हैं।

मै आपको कोई पाठ पढ़ाने नहीं आया हूं, सूरत में क्षत्रिय युवक संघ के काम से कई बार पहले भी आया हूं, मुझे लगता है एक बार इस परिसर में भी आया हूं। पहले आया था लोगों के आग्रह पर और इस बार इच्छा से आया हूं यह संभालने की जो बीज बोया था वो नष्ट तो नहीं हो गया, यदि वो अंकुरित हुआ है, पल्लवित हुआ है तो इसको बाहर वातावरण ने नष्ट तो नहीं कर दिया है। मैं यहां विभिन्न लोगों से मिला हूं पुरुषों, स्त्रियों, बच्चों से। उनसे मैंने एक बात पूछी कि मैं यहां क्यों आया हूं यह मैं जानता हूं पर आप मेरे पास क्यों आए? साधारणतया भारतीय लोग विनम्रता पूर्वक निवेदन करते हैं कि हम आपके दर्शन करने आए हैं, दर्शन से कुछ काम बनता तो फोटो खींचकर वहां देख लेता पर मैं यहां संवाद करने आया हूं, राजी खुशी के समाचार पूछने आया हूं। कहीं स्त्रियों से पुरुष, पुरुषों से स्त्रियाँ, मां-बाप से बच्चे या बच्चों से अभिभावक परेशान तो नहीं हैं, यदि परेशान हैं तो हमारे जीवन में क्लेश है और जो क्लेश में जीता है उसके बहुत समस्याएं आती हैं। वह श्री क्षत्रिय युवक संघ की बात नहीं समझ सकता। हम जिस मार्ग पर चल रहे हैं, क्या हमें हमारे जीवन का लक्ष्य मालूम है? अगर जानते हैं तो क्या वहां तक पहुचने का मार्ग ढूंढा है, बिना इसको जाने हम सुखी नहीं रह सकते हैं।

समाज के अनेक संगठन पीछे चलने वालों को दोष देते हैं, पीछे वाले लोग कहते हैं कि समाज के नेता बुरे हैं तो सभी एक-दूसरे से क्लेश ही तो कर रहे हैं। ऐसे में संगठन नहीं हो सकता। संगठन के लिए अनुशासन की आवश्यकता है। जिनका संयम का जीवन नहीं है वह न तो संगठन कर सकता है, न नेतृत्व कर सकता है, और न धर्म के अनुकूल चल सकता है। अनुशासन आता है संयम से, संयम हमें सिखाता हैं कि जो त्यागी नहीं हैं वो समाज, परिवार और राष्ट्र को नहीं संभाल सकता है। हम इस बात को टटोलते रहते हैं कि कमी कहां है, मेरे परिवार में लोग सुखी क्यों नहीं है? सोचें! कहीं कोई मेरे कारण तो असुविधा नहीं हैं, मेरे हंसने, रोने, पूजा, आराधना से परिवार दुखी तो नहीं हो रहा। मेरे किसी भी कार्य से कोई दुःखी तो नहीं हो रहा है। जिस परिवार में बच्चे नहीं वो परिवार शमसान व जिस घर में स्त्री नहीं वो घर मठ है। जो पुरुष-स्त्री का सम्मान नहीं करता वो पुरुष पुरुष नहीं और जो स्त्री पुरुष का सम्मान नहीं करती वो स्त्री स्त्री नहीं, वे संसार के लिए कोई सन्देश नहीं छोड़ पाते। तनसिंह जी ने यह बात सिखाई कि मेरी फरियाद घर-घर में पहुंचा देना लेकिन घर-घर पहुंचाने से पहले अपने घर पहुंचाने की आवश्यकता है।

श्री क्षत्रिय युवक संघ की शाखाओं और शिविरों में आने वाले कभी-कभी संघ का सन्देश अपने घर में नहीं ले जा पाते, उनके परिवार वाले देखते हैं कि जो बच्चा हमारा कहना नहीं मानता, वो इनका कहना मानता है क्योंकि संघ की व्यवस्था ऐसी हैं। जो संघ को परिवार में नहीं ले जा पाते वे केवल मात्र दर्शन कर रहे हैं। जो मंदिरों में जाते हैं वे अपने को धार्मिक मानते हैं पर धर्म क्या है यह नहीं जानते और जो नहीं जानता वो अज्ञान में है, अंधकार में है। अज्ञान और अंधकार में किए हुए कार्य का कोई अर्थ नहीं। श्री क्षत्रिय युवक संघ में आने के बाद कोई बदलाव नहीं आता तो लोग आरोप लगाते हैं कि संघ ने कितने लोगों को तैयार किया? लाखों लोग संघ में आए हैं और आते हैं, बाद में छूट जाते हैं, फिर नए आते हैं और छोड़ देते हैं। बाहरी वातावरण हमें प्रभावित करता है, शिविर में अनुशासन में रहते हैं और ज्योंही बाहर आते हैं हमारा अनुशासन टूट जाता हैं। हम किसी और के पीछे नहीं चल रहे हैं। हमारे ही काम, क्रोध, लोभ, मोह और ईर्ष्या हमारे पर हावी हो जाते हैं। संघ सिखाता है स्त्री का सम्मान करो, जो स्त्री का सम्मान नहीं करता और भगवती की प्रार्थना करता है तो भगवती प्रसन्न नहीं होगी। मां, बेटी, स्त्री का अपमान करते हैं वहां देवता वास नहीं करेंगे। परिवार में देवताओं के वास के लिए हमें देवी-देवता बनना होगा और ऐसे परिवार के बच्चे कुछ और नहीं हो सकते। अधिकांश लोग कहते हैं हमारे बच्चे कहने में नहीं है, बच्चे बिगड़ गए हैं तो मैं कहता हूं बिगड़े बच्चे नहीं मां-बाप बिगड़ गए हैं। आम के पेड़ पर आम लगता है, बबुल के पेड़ पर आम नहीं लग सकता। ऐसी कोई संस्था है जो हमारी चिंता करती है, हमारे बच्चो की निगरानी करती हैं तो मैं हंसी-खुशी यह संस्था छोड़ने को तैयार हूं, उनकी बात का अनुसरण करने के लिए तैयार रहूंगा। इस संस्था को छोड़ने में क्षण भी नहीं लगाऊंगा अगर विकल्प हो तो बताओ और नहीं है तो श्री क्षत्रिय युवक संघ है राजपूत जाति और सम्पूर्ण क्षत्रियों के लिए। गुजरात, राजस्थान, पंजाब, मध्यप्रदेश, तेलंगाना सब एक समान हैं जिसकी इतनी व्यापक दृष्टि नहीं होगी वो न देश में काम कर सकता है, न समाज में लेकिन हमें प्रारंभ कहां से करना है? जो स्वयं का कल्याण नहीं कर सकता वो अन्यों का क्या करेगा?

'निज को न बनाया तो जग रंच नहीं बनता'

जो संसार को सुधार का मार्ग बताना चाहते हैं उनके जीवन में सच्चाई है तो लोग उनका अनुसरण करते हैं और नही है तो पतन के मार्ग पर जाते हैं। गीता में भगवान ने कहा कि मुझे कुछ भी करना शेष नहीं हैं किन्तु मैं प्रयत्न करना छोड़ देता हूं तो संसार के लोग पतित हो जाते हैं, वो वर्ण संकर हो जाते हैं। हममे से कोई कह सकता हैं कि मैं गीता के बताएं मार्ग पर चल सकता हूं, लोग चले न चले मैं जरूर चलूंगा। श्री क्षत्रिय युवक संघ की बात मुझे अच्छी लगती है तो श्री क्षत्रिय युवक संघ जैसा चाहता है वैसा मैं बनूं। आना जाना चलता रहता हैं, **'कबीरा जब हम पैदा हुए जग हंसा हम रोये, ऐसी करनी कर चलो हम हंसें जग रोए'**। हम भाग्यवान हैं कि भगवान ने हमें मनुष्य बनाया और हम उस राष्ट्र के नागरिक हैं जो विश्व गुरु रहा हैं। पर यहां आकर हमारा लगाव हो जाता है। धन-दौलत, पति-पत्नी, बच्चों में उलझ जाते हैं। विवेकानंद जी ने कहा है कि जो मंदिर नहीं जाता वो नास्तिक है और जो रोज मंदिर जाता है वो भी नास्तिक है। मंदिर में जाते जाते हमें यह बात समझ में आ जानी चाहिए कि भगवान कहते हैं मैं प्रत्येक प्राणी के हृदय में निवास करता हूं और हम पत्थर की मूर्ति में भगवान ढूंढते हैं और प्राणियों से भेदभाव रखते हैं कितने अनजान हैं? मंदिर जाना बुरी बात नहीं हैं पर मंदिर जाते-जाते यह बात समझ में आ जानी चाहिए कि मूर्ति को हमने बनाया और हमें भगवान ने बनाया है। हम देखना प्रारंभ करें, किसी पर लांछन नहीं लगाएं। जिस देश में, जिस समाज और परिवार में अनुशासन नहीं है वो देश, समाज और परिवार सुखी नहीं हो सकता। भगवान ने हमें ऐसा उतम जीवन दिया कि तुम मेरे जैसे हो जाओ। मैंने तुमको इन्सान के घर जन्म दिया है। जिस तरह मंदिर में पत्थर की मूर्ति होती है और उसकी प्राण-प्रतिष्ठा करके निरंतर पूजा करते हैं इसी तरह से भगवान ने मनुष्य शरीर दिया और कहा की इन्सान बन जाओ। गीता में भगवान और अर्जुन के संवाद में अर्जुन ने कहा कि मैं युद्ध नहीं करुंगा, भीख मांग कर खा लूंगा। तब भगवान अर्जुन को कहते हैं कि तेरे क्षात्रधर्म को ध्यान में रखते हुए यह उचित नहीं हैं। अन्य कोई मार्ग नहीं है, ईश्वर की प्राप्ति का मार्ग यही है। अर्जुन को कही हुई बात जिसमें ज्ञान, ध्यान, योग सब त्याग करके 'तस्मात उत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृत निश्चय' का आदेश है। युद्ध कर इसमें तेरा कुछ भी नहीं है भगवान का आदेश है, दुनिया करुण क्रन्दन कर रही है, हमे सुनाई पड़ रहा है इसीलिए यह बीड़ा उठाया श्री क्षत्रिय युवक संघ ने। इस संसार का कल्याण करना है हमको और कोई करने वाला नहीं है। इसके लिए अपने जीवन की आहुति देनी है। देश, धर्म, मंदिरों और गाय की रक्षा में अपने प्राण न्यौछावर करने वाले लोग ही संसार का कल्याण कर सकते हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ ललकार कर कहता है, क्या तुमको संसार की दुर्दशा दिखाई नही पड़ रही? भगवान का संदेश हमको धिक्कार रहा हैं और संघ इस धिक्कार को हम तक पहुंचा रहा है। भगवान ने संसार का नेतृत्वकर्ता बनाया था कि कुछ भी गलत मत होने देना, अन्याय सहन मत करना।

हम यहां हजारों की संख्या में एकत्रित हुए हैं तो परिचय बढ़ा जिससे आत्मीयता बढ़ेगी और इससे शक्ति आएगी और शक्ति से सामर्थ्य आएगा और जब सामर्थ्य होगा तब क्या नहीं कर सकते इसीलिए संगठन की आवश्यकता है। यह तभी संभव है जब हम बार बार मिलते रहेंगे। ऐसे कार्यक्रमों में आने से हमारे जीवन में कोई परिवर्तन नहीं आता तो मैं आपको सौगंध तो नहीं दिलाता पर याद दिलाता हूँ कि आप वो लोग हैं जो संसार का नेतृत्व करते थे, रास्ता दिखाते थे। **'मग भूल गया है जो उसका नहीं कोई रे।'** जो लोगों को रास्ता दिखाने वाले थे खुद ही रास्ता भूल गए। हम संसार का कल्याण चाहते हैं तो उठो, जागो! संसार तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है। भगवान का संदेश आपको दे रहा हूं जागो! सोने का समय चला गया। अपना और संसार का कल्याण करने के लिए सबसे पहला कार्य है परिवार में सुख और शांति। क्लेश न करें, यह आज के कार्यक्रम की पृष्ठभूमि है। हम मिलते रहेंगे। जब तक हमारे परिवार में सुख और शांति नहीं आती है तब तक संसार को शांति नहीं दे सकते हैं। हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि हमको देते जाएं, देते जाएं। भगवान सबको सबकुछ दे ही रहा है मांगने की आवश्यकता नहीं है। हमें हमारा कर्तव्य कर्म करते रहना है **'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'** तुम कर्म करते जाओ फल की चिंता मत करो। स्त्रियां अपने कर्तव्य का पालन करें, पुरुष अपने कर्तव्य का पालन करें, फल मैं दूंगा ऐसा भगवान ने गीता में कहा है। आपके प्रयत्न से पति-पत्नी, बच्चे खुश हो जाएं आपको यह प्रयत्न करना चाहिए। वे सुखी हो न हो, हमने हमारा काम कर लिया। जो स्वयं का काम कर लेता है वो सदा सुखी रहता है और ऐसे लोग भगवान की उपसना संघ के माध्यम से कर रहे हैं। आपको जंगल में जाकर तपस्या करने की आवश्यकता नहीं है, भगवान ने सबकुछ आपको दिया है। अन्तकरण की शुद्धि रखें और सद्‌कर्म करते रहें, सभी अपने धर्म का पालन करते रहें। अन्तकरण की शुद्धि के बिना भगवान के दर्शन नहीं हो सकते, न भगवान का स्पर्श कर सकते तो प्रश्न उठता है कि अन्तकरण की शुद्धि कैसे करें इसका उत्तर है सद्‌कर्म करें। तो प्रश्न पैदा होता है कि कौनसे सद्‌कर्म तो हमारे पास भगवत संदेश है धर्म का पालन। पुरुष है वो पुरुष धर्म का पालन करे, स्त्री अपने स्त्री धर्म का पालन करे, विद्यार्थी हैं तो विद्यार्थी धर्म का पालन करें, व्यापरी व्यापार धर्म का, आप राज में हैं तो राज धर्म का पालन करें। जो अपने धर्म का पालन नहीं करता वो कभी भगवत प्राप्त नहीं हो सकता। हमारे लिए सीधा सा और सरल मार्ग है क्षात्र धर्म का पालन। यही पढाया जाता है श्री क्षत्रिय युवक संघ में। संघ का कार्य ईश्वरीय कार्य है और हमको जागना होगा, उठना होगा, इस मार्ग को अपनाना होगा, संसार को मार्ग दिखाना होगा। हम लोगों के पास आपके बच्चे आते हैं, आप भी शिविरों के लिए सहयोग करते हैं, बच्चो को भेजते हैं यह आप का उपकार है और जो संसार का उपकार भूल जाता हैं वो इन्सान नहीं हैं इसलिए इंसानियत के नाते मैं आपका आभार प्रकट करता हूं इसलिए नहीं की आप इस सभा में आये बल्कि इसलिए कि मैं इन्सान हूं। कोई मुझे कहता हैं कि घूमता ही रहता है, यदि आप लोगों का सहयोग न हो तो सब धरा का धरा रह जाता है इसलिए मैं आपका अति आभारी हूं। प्रकट नहीं कर रहा हूं, मैं बता रहा हूं मेरे भाव। इसलिए आप लोगों को भी इसी तरह से पूरे संसार का उपकार मानना चाहिए।

जय संघशक्ति!

निखिल देवड़ा बने लेफ्टिनेंट

सिरोही जिले के विरोली गांव निवासी निखिलसिंह देवड़ा 7 सितम्बर को हुई पासिंग आउट परेड के बाद भारतीय थल सेना में लेफ्टिनेंट अधिकारी बन गए हैं। मात्र 21 वर्ष की उम्र में सीडीएस परीक्षा उत्तीर्ण कर एनसीसी के माध्यम से प्रथम प्रयास में ही एसएसबी क्लीयर कर देवड़ा ने सम्पूर्ण भारत में 17वीं रैंक हासिल की थी। इसके बाद ओटीए चैन्नई में इनका प्रशिक्षण हुआ।

ब्रिगेडियर हरिसिंह मेमोरियल सेमिनार सम्पन्न

पाकिस्तान से युद्ध के दौरान लाहौर विजय के तहत लाहौर के वर्की पुलिस स्टेशन पर तिरंगा फहराने वाले ब्रिगेडियर हरिसिंह गलथनी की स्मृति में 8 सितम्बर को सुमेरपुर में सेमिनार एवं प्रदर्शनी आयोजित की गई। सेमिनार में पाली सांसद एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री पी.पी. चौधरी, सुमेरपुर विधायक जोराराम कुमावत, बाली विधायक एवं पूर्व मंत्री पुष्पेन्द्रसिंह राणावत, आहोर विधायक छगनसिंह राजपुरोहित, पूर्व मंत्री ओटाराम देवासी सहित अनेक गणमान्य लोग एवं समाजबंधु उपस्थित रहे। सांसद चौधरी ने इस अवसर पर सुमेरपुर शहर में ब्रिगेडियर हरिसिंह के नाम से सर्किल बनवाने एवं उस पर उनकी मूर्ति लगवाने की घोषणा की। वक्ताओं ने ब्रिगेडियर साहब के जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही।

पूर्व सैनिक सेवा परिषद राजस्थान का वार्षिक सम्मेलन

पूर्व सैनिकों के संगठन पूर्व सैनिक सेवा परिषद् का दो दिवसीय वार्षिक सम्मेलन 31 अगस्त व 1 सितम्बर को आदर्श विद्या मंदिर (माध्यमिक) रानी (पाली) में संपन्न हुआ। इसमें वर्ष भर की गतिविधियों एवं उपलब्धियों पर चर्चा की गई। सम्मेलन को क्षेत्रीय अध्यक्ष मांधातासिंह, कर्नल जे.एस. बुन्देला, ब्रिगेडियर फतेहसिंह, प्रदेश संगठन मंत्री हनुमानसिंह शेखावत, राष्ट्रीय सचिव कैप्टिन उम्मेदसिंह राठौड़, नारायण सिंह जोधा, मूलाराम भाटी, डालसिंह शेखावत आदि ने संबोधित किया।

मुख्यमंत्री को ज्ञापन सौंपा

राजपूत सभा जयपुर के अध्यक्ष गिरिराजसिंह लोटवाड़ा एवं मारवाड़ राजपूत सभा जोधपुर के अध्यक्ष हनुमानसिंह खांगटा की अगुवाई में एक प्रतिनिधि मंडल ने राजस्थान के मुख्यमंत्री से मिलकर आर्थिक आधार पर आरक्षण की शर्तों को अन्य पिछड़ा वर्ग के अनुरूप करते हुए केवल आठ लाख आय की ही शर्त रखने की मांग का एक ज्ञापन सौंपा। मुख्यमंत्री जी से संवेदनशीलता के साथ इस विषय पर सकारात्मक निर्णय करने का निवेदन किया गया। मुख्यमंत्री ने उचित कार्यवाही का आश्वासन दिया।

गजेन्द्रसिंह आऊ को मातृशोक

संघ के केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ की माताजी **श्रीमती सुगनकंवर** का 80 वर्ष की उम्र में 10 सितम्बर को देहांत हो गया। परमेश्वर इनको अपने श्रीचरणों में स्थान देवें एवं परिवार को इस क्षति को सहन करने की क्षमता देवें। पथप्रेरक परिवार इनके निधन पर हार्दिक श्रद्धांजलि व्यक्त करता है।

श्रीमती सुगनकंवर

तखतसिंह परमार नहीं रहे

गुजरात के प्रसिद्ध साहित्यकार **तखतसिंह परमार** का 11 सितम्बर को देहावसान हो गया। आप भावनगर कॉलेज में प्राचार्य थे एवं भावनगर राजपूत बोर्डिंग हाउस में भी लम्बे समय तक सेवा दी। पूरे गुजरात में 'गुरुजी' के नाम विख्यात श्री परमार राजपूत समाज के लोगों के लिए हमेशा मार्गदर्शक की भूमिका में रहे। पथप्रेरक परिवार इनके निधन पर हार्दिक श्रद्धांजलि व्यक्त करता है।

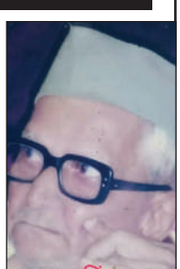

तखतसिंह परमार

(पृष्ठ एक का शेष)

माननीय संघ... संघप्रमुख श्री ने 1996 में स्वर्ण जयन्ती सहित 2003 व 2008 के ऐतिहासिक आयोजनों के संस्मरण सुनाते हुए कहा कि हमारा संकल्प और निष्ठा हो तो भगवान हमारे लिए सभी व्यवस्था कर देते हैं। 2 सितंबर की शाम को काणेटी तथा सुरेंद्रनगर में रहने वाली स्वयंसेविकाएं तथा मातृशक्ति ने शक्तिधाम पहुंचकर माननीय संघप्रमुख श्री का सान्निध्य प्राप्त किया। उस दिन ऋषि पंचमी भी थी अतः संघप्रमुख श्री ने उपस्थित मातृशक्ति को ऋषि का अर्थ तथा महत्त्व बताया। 3 सितंबर को दिन में सुरेंद्रनगर शहर तथा आस-पास के गांवों से लगभग 150 ऐसे व्यक्ति शक्तिधाम पहुंचे जो क्षेत्र में संघकार्य में नियमित रूप से सहयोग करते हैं। संघप्रमुख श्री ने सभी सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि समाज की सेवा में आप सभी का सहयोग स्तुत्य है यद्यपि और भी अधिक सक्रिय सहयोग की आवश्यकता बनी हुई है। इस आवश्यकता को भी आप को ही पूरा करना है। 4 सितंबर को प्रातः संघप्रमुख श्री के प्रयोग हेतु नवनिर्मित कमरे का उद्घाटन पारंपरिक विधि से मंत्रोच्चार के साथ किया गया। वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा ने यज्ञ सम्पन्न करवाया। इसी दिन आर्यसमाज के स्वामी आर्यबन्धु संघप्रमुख श्री से मिलने पहुंचे। उन्होंने अंतिम संस्कार, अंत्येष्टि आदि से संबंधित जिज्ञासाएं सामने रखीं जिनका संघप्रमुख श्री ने समाधान किया। धर्म, शास्त्र, ज्ञान, भक्ति आदि विविध विषयों पर चर्चा हुई। 5 सितंबर को भावनगर से स्वयंसेविकाएं तथा मातृशक्ति शक्तिधाम पहुंची तथा संघप्रमुख श्री से मार्गदर्शन प्राप्त किया। इस दौरान परिवार में संघ के अनुकूल वातावरण बनाने, भावी पीढ़ी तक संघ के विचार दर्शन को पहुंचाने आदि पर चर्चा हुई। 6 सितंबर को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के धर्म जागरण विभाग के राजपूत परियोजना के गुजरात प्रभारी सत्यम राव माननीय संघप्रमुख श्री से भेंट करने शक्तिधाम पहुंचे। उन्होंने 15 सितंबर को अहमदाबाद में आयोजित होने वाले राजपूत सम्मेलन में पधारने हेतु संघप्रमुख श्री को निमंत्रण दिया। साथ ही राजपूत परियोजना के अंतर्गत किए जा रहे कार्यों से उन्हें अवगत कराया। संघप्रमुख श्री ने इस कार्य की सराहना की तथा यथासंभव सहयोग का आश्वासन दिया। 6 सितंबर की रात्रि को माननीय संघप्रमुख श्री ने सूरत हेतु प्रस्थान किया। 7 सितम्बर की सुबह सूरत में अल्पाहार के समय सूरत की सभी शाखाओं के स्वयंसेवकों से संवाद किया। अपराह्न 2.30 बजे से 5 बजे तक राजस्थान राजपूत समाज सूरत के पदाधिकारियों के साथ बैठक की। शाम 5 से 7 बजे तक स्वयंसेवकों के परिवार की महिलाओं से चर्चा की। साथ में प्रवास कर रहे वयोवृद्ध स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा ने इस दौरान गुजराती महिलाओं से संवाद किया। 8 सितम्बर को क्षत्रिय सम्मेलन में शिरकत की। 8 सितम्बर की शाम कच्छ काठियावाड़ राजपूत समाज व हमीर जी शाखा उजाण के स्वयंसेवकों से मिले। शाम को 5 बजे भायंदर शाखा के स्वयंसेवकों के परिवारों से मिले। 10 सितम्बर को प्रातः मुंबई की विभिन्न शाखाओं के स्वयंसेवकों से मिले एवं शाम को 6 बजे पारिवारिक स्नेहमिलन को संबोधित किया एवं सबके साथ स्नेहभोज में शामिल हुए। 11 को प्रातः 6.45 बजे की फ्लाईट से जयपुर के लिए प्रस्थान किया।

संघ किसी... आजादी के तुरन्त बाद के शासकों में राष्ट्रीयता नजर आती है लेकिन कालांतर में सर्वत्र पतन हम देख रहे हैं। इस गिरावट को बचाने वाला क्षत्रिय स्वयं पतित होता जा रहा है इसी पीड़ा की उपज श्री क्षत्रिय युवक संघ है। हम संसार की चिंता करें, राष्ट्र को बचाए इससे पूर्व आवश्यक है अपने आपको बचाए। हम हमारे स्वरूप को भूल गए है उसे याद करें। उस ओर बढ़ने का मार्ग बताया पूज्य तनसिंह जी ने। अनेक विपरीत परिस्थितियों को झेलते हुए उन्होंने हमें संघ का वर्तमान स्वरूप सौंपा। कर्म के मार्ग से स्वयं को व संसार को बनाने का मार्ग पूज्य तनसिंह जी ने हमे सौंपा। संघ नया कुछ नहीं कर रहा हमारे श्रेष्ठ पूर्वजों ने जो किया, जो दिया उसी का स्वरूप है। क्षत्रिय के लिए क्षात्रधर्म उपहार है, उसे कही जाने की आवश्यकता नहीं है, कोई अलग से साधना करने की आवश्यकता नहीं है, बस भगवान द्वारा सौंपे दायित्व को समझ कर उसके अनुरूप चलने की आवश्यकता है। **करने आए कर न सके तो जीवन तद्वर व्यर्थ फले है,** ऐसा तनसिंह जी ने कहा। इसके अभाव में हमारा जीवन दिनों की हत्या है। इसलिए जागरुक होकर संघ का सक्रिय सहयोग करें, यह परमेश्वर का काम है।

छात्रसंघ... (पृष्ठ एक का शेष)

1.	रविन्द्रसिंह भाटी	अध्यक्ष	जयनारायण व्यास विवि, जोधपुर।
2.	धर्मेन्द्रसिंह शेखावत	अध्यक्ष	स्वामी केशवानंद कृषि विवि, बीकानेर।
3.	निखिलराज सिंह राठौड़	अध्यक्ष	मोहनलाल सुखाड़िया विवि, उदयपुर।
4.	उदयसिंह चौहान	अध्यक्ष	राजकीय महाविद्यालय, कपासन (चित्तौड़गढ़)।
5.	डूंगरसिंह भाटी	अध्यक्ष	सांगीदान बालकिशन कोठारी राजकीय महाविद्यालय, जैसलमेर
6.	गरिमा कंवर नरुका	अध्यक्ष	बांगड़ कॉलेज, डीडवाना।
7.	रामसिंह कुण्डल	अध्यक्ष	वीर वीरमदेव स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जालोर।
8.	विश्वनाथ प्रतापसिंह	अध्यक्ष	संस्कृत कॉलेज, अलवर।
9.	कृष्णपालसिंह भारूंदा	अध्यक्ष	राजकीय महाविद्यालय, शिवगंज (सिरोही)।
10.	मनीषा कंवर भाटी	अध्यक्ष	राजकीय महाविद्यालय चौपासनी, (जोधपुर)।
11.	प्रियंका कंवर नरूका	अध्यक्ष	के.एन. कॉलेज, जोधपुर।
12.	दीपिका कंवर	उपाध्यक्ष	के.एन. कॉलेज, जोधपुर।
13.	देवीसिंह बरजासर	अध्यक्ष	सायंकालीन संकाय, जयनारायण व्यास विवि, जोधपुर।
14.	रणजीतसिंह सारूंडा	अध्यक्ष	आदेश महाविद्यालय, कोलायत, बीकानेर।
15.	कमलसिंह राठौड़	महासचिव	राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, बीकानेर।
16.	यशस्वी राठौड़	अध्यक्ष	गृह विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर।
17.	भूपेन्द्रसिंह देवड़ा	अध्यक्ष	कला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उदयपुर।
18.	मंगलसिंह चौहान	अध्यक्ष	सेठ मथुरादास बिनानी, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नाथद्वारा।
19.	विनोदसिंह झाला	उपाध्यक्ष	विज्ञान महाविद्यालय, उदयपुर।
20.	भाविनी राणावत	उपाध्यक्ष	गुरुनानक कन्या महाविद्यालय, उदयपुर।
21.	हिमांशु सिंह शेखावत	अध्यक्ष	राजकीय चमड़िया महाविद्यालय, फतेहपुर (सीकर)।
22.	विनयराज सिंह	अध्यक्ष	विज्ञान महाविद्यालय, कोटा।
23.	दुर्लभसिंह चौहान	अध्यक्ष	लॉ कॉलेज, कोटा।
24.	राहुलसिंह चौहान	अध्यक्ष	नर्सिंग कॉलेज, कोटा।
25.	डोली कंवर	अध्यक्ष	कन्या महाविद्यालय, बूंदी।
26.	अभिषेक सिंह	अध्यक्ष	केलबाग महाविद्यालय, बारां।
27.	जिलेसिंह	उपाध्यक्ष	केलबाग महाविद्यालय, बारां।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हमारे प्रिय

रविन्द्रसिंह भाटी (दुधोड़ा)

द्वारा निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय

के **छात्रसंघ अध्यक्ष** बनकर

ऐतिहासिक विजय हासिल करने पर

हार्दिक बधाई एवं

उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

पदमसिंह लुणू
राठौड़ टेंट हाउस
श्रीतनसिंह सर्किल,
बाड़मेर

गिरधरी सिंह इन्द्रोई
विजय टेंट हाउस
सियाणी
(रामसर-बाड़मेर)

हिम्मतसिंह दांता
मातेश्वरी बिल्डिंग
मेटेरियल सप्लायर,
महावीर सर्किल, बाड़मेर

सुमेरसिंह मारूड़ी
महावीर स्टोन क्रेशर
मारुड़ी (बाड़मेर)

स्वरूपसिंह भाडली
अरविन्द एन्टरप्राइजेज
रॉय कॉलोनी, बाड़मेर

रूपसिंह माडपुरा
मातेश्वरी मेडिकल स्टोर
राजकीय अस्पताल के
पास, बाड़मेर

महेन्द्र सिंह पुत्र
नखतसिंह भाटी
ताणू मानजी, बाड़मेर

अजयपालसिंह माडपुरा
भगवती कंस्ट्रक्शन
कम्पनी
सरदारपुरा, बाड़मेर

गोरूसिंह सरली
मां वांकल किराणा स्टोर
महाबार रोड, बाड़मेर

सुमेरसिंह
ताणू मानजी, बाड़मेर
मो. 9610188189

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org